बहुत हो चुका देर!

सो रहा था कुत्ता एक
सडक पर आराम, निश्चल □
नहीं उसे परवाह किसीका
गाड़ी का, कीड़े का
गुज़रते आदमी का
पशु-पक्षी का
क्या रह सकता मनु-सन्तान
ऐसे चैन आराम?
वाह! जीवन है कैसे उसका
तन-मन शन्त-समतुल □
खाना-पीना, सुख से सोना
खोना गहन नींद में निर्मम
है उसे भी जननी-जनक
भाई-बहन , पति-पत्नी
फिर भी नहीं रिश्ता-वास्ता
जैसे होता नर-परिवार
न ही सोच है धन-धरती का
रूप-रंग, भाषा का
न विवेक है, बुद्धि, वृद्धि
सृजनता और सूझ-बूझ

हो सकते हैं इंसान भी ऐसे?

जी सकते हैं बेसोच?

हैं उसे घर-धर विद्या-विकास

बन्धु-बान्धव, साथी-सहचर

हैं सोच भी भविष्य का

बीते अतीत का

जीते वर्तमान का

नहीं हैं निद्रा सुख-सुकून

केवल ख्याल संभाव्य का

करते खराब वर्तमान का

हेतु सोच-आगामी

उठा चौंककर कुत्ता बेचैन

देखा-परखा चारों

भौ-भौ करके घूमा आँखें

कोशिश किया उठान

कठिन हो गया उठना-चलना

खड़ा न पाया लंगड़ा

शयन थी भारी, हो चुकी देर

नहीं था कोई भी सुनने

कोई न देते आश्रय

इधर-उधर घूमकर घुस गया लंगड़ा

कुत्ता एक श्मशान

लिया शरण वह धरती का फिर

होशी मानव बेसुध नीचे

था स्वामी उस ज़मीन का

लेटा कुत्ता ऊपर उसके

कहूँ किसे अब स्वामी?

मानव, धरती या वह कुत्ता

जो लेटा सब ऊपर

हो गया अंधेरा, सो गया सूरज

बहुत हो चुका देर

बहुत हो चुका वक्त□□